Krishnagar Academy.

विषय - हिन्दी

कक्षा - X

वाच्य किसे कहते है तथा इसके भेद

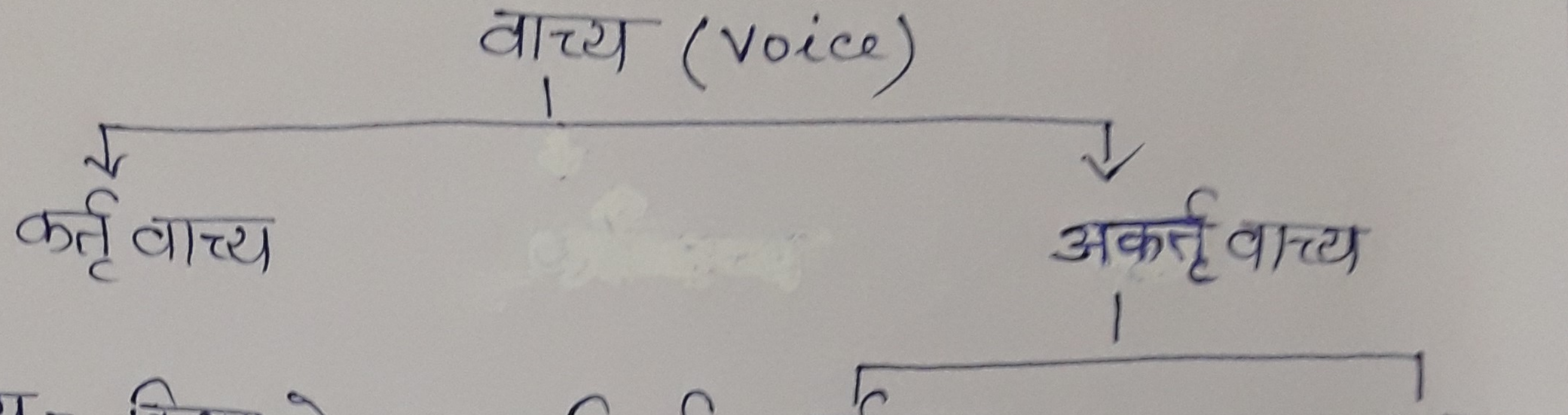

वाच्य- क्रिया के उस परिवर्तन को वाच्य कहते है. जिसके द्वारा इस बात का बोध होता है कि वाक्य के अन्तर्गत, कर्ता, कर्म या भाव में से किसकी प्रधानता है। दूसरे शब्दों में क्रिया के जिस रूपान्तर से यह ज्ञात हो कि वाक्य में प्रयुक्त क्रिया का प्रधान विषय कर्त्ता है, कर्म है अथवा भाव है, उसे वाच्य कहते है।

कर्तृ वाच्य - जिन वाक्यों में वक्ता कर्ता के कार्य को प्रधानता देता है वे वाक्य कर्तृवाच्य कहलाते है। उनमे सकर्मक और अकर्मक दोनो प्रकार की क्रिया हो सकती है। जैसे - बच्चा सोता है। (अकर्मक क्रिया)
बच्चा दूध पीता है। (सकर्मक क्रिया)

अकर्तृवाच्य - अर्थात जो वाक्य कर्तृ वाच्य नही है जिसमे वक्ता के द्वारा कर्ता के कार्य को निरस्त (प्रभावहीन) किया जाना है

अकर्तृवाच्य में संरचना के आधार पर दो भेद होते है।
(i) कर्ता के बाद 'से' या 'के द्वारा' जोड़कर/लगाकर
(ii) क्रिया के मध्य में 'जा' प्रत्यय जोड़कर
जैसे (i) अध्यापक हिन्दी पढा रहा है। (कर्तृवाच्य)
(ii) अध्यापक द्वारा हिन्दी पढ़ायी जा रही है। (अकर्तृवाच्य)

वाच्य के भेद

वाच्य के तीन भेद है

1. कर्तृ वाच्य (Active Voice)
2. कर्म वाच्य (Passive Voice)
3. भाव वाच्य (Impersonal Voice)

1. कर्तृ वाच्य - क्रिया के उस रूपान्तर को कर्तृवाच्य कहते है, जिससे वाक्य में कर्ता की प्रधानता का बोध हो अर्थात क्रिया के जिस रूप में कर्ता प्रधान हो उसे कर्तृवाच्य कहते है

उदाहरण : 1. रमेश सेव खाता है
2. दिनेश पुस्तक पढ़ता है।

★ उपरोक्त वाक्यों में क्रिया, लिंग वचन और पुरुष सदा कर्ता के अनुसार होता है।
तथा वाक्यों में कर्ता प्रधान है और उन्ही के लिए 'खाता है' और 'पढ़ता है' क्रियाओं का विधान हुआ है, इसलिए यहाँ कर्तृवाच्य है।

2. कर्म वाच्य - क्रिया के उस रूपान्तर को कर्मवाच्य कहते है, जिससे वाक्य में कर्म की प्रधानता का बोध हो अर्थात क्रिया के जिस रूप में कर्म प्रधान हो उसे कर्मवाच्य कहते है।

उदाहरण : 1 कवियों द्वारा कविताएँ लिखी गई।
2. श्याम से कहानी पढ़ी गई।

★ उपरोक्त वाक्यों में क्रिया, लिंग वचन और पुरुष सदा कर्म के अनुसार हुआ क्योंकि वाक्यों में कर्म प्रधान है और उन्ही के लिए 'लिखी गई' व 'पढ़ी गई' क्रियाओं का विधान हुआ है अतः यहाँ कर्म वाच्य है।

भाववाच्य- क्रिया के उस रूपान्तर को भाववाच्य कहते हैं, जिससे वाक्य में क्रिया अथवा भाव की प्रधानता का बोध हो अर्थात् क्रिया के जिस रूप में न तो कर्ता की प्रधानता हो और न ही कर्म की, बल्कि क्रिया का भाव ही प्रधान हो, वहाँ भाववाच्य होता है।

* इस वाच्य में वाक्य में अशक्तता का बोध होता है।

उदाहरण के लिए: 1. मोहन से टहला भी नहीं जाता।
2. मुझसे धूप में चला नहीं जाता।

उक्त वाक्यों में कर्ता या कर्म प्रधान न होकर भाव मुख्य है। अतः इनकी क्रियाएँ भाववाच्य का उदाहरण है।

वाच्य-परिवर्तन

1. कर्तृवाच्य से कर्मवाच्य में बदलने के लिए निम्न कार्य करने चाहिए
   (i) कर्ता कारक में करण कारक के चिह्न 'से/द्वारा' का प्रयोग करना चाहिए
   (ii) क्रिया को कर्म के लिंग वचन पुरुष के अनुसार रखना चाहिए अर्थात कर्म प्रधान बनाना चाहिए

कर्तृवाच्य	कर्मवाच्य
(i) राकेश पुस्तक पढ़ रहा है।	राकेश के द्वारा पुस्तक पढ़ी जा रही है।
(ii) महेश पत्र लिखता है।	महेश के द्वारा पत्र लिखा जा रहा है।
M.M. (i) बच्चे शोर मचाएँगे	?
(ii) आप गाना गाइए।	?